# शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

बेटे की कमाई की तरह
मिली हमें कल
बोरसी में दबी हुई आग।

चौसर की गोट-सी
घायल की चोट-सी
घाटों की बोट-सी
घूँघट की ओट-सी
जूते की पवाई की तरह
मिली हमें कल
बोरसी में दबी हुई आग।

साड़ी की कोर-सी
आँखों की लोर-सी
अँगुरी की पोर-सी
लट्टू की डोर-सी
फेरे की सगाई की तरह
मिली हमें कल
बोरसी में दबी हुई आग।

भूसे की टाल-सी
पीपल की डाल-सी
लपटों की शाल-सी
अरहर की दाल-सी
भाड़े की चटाई की तरह
मिली हमें कल
बोरसी में दबी हुई आग|

फागुन की हवा-सी
खुजली की दवा-सी
फूलों की जवा-सी
चंदन की चवा-सी
जाड़े की रजाई की तरह
मिली हमें कल
बोरसी में दबी हुई आग।